

# डिजिटल भारत और बदलते सामाजिक सम्बन्ध: सोशल मीडिया के संदर्भ में युवाओं के व्यवहार का समाजशास्त्रीय अध्ययन

डॉ. पूजा राठी

सहायक आचार्य (समाजशास्त्र)

रामेश्वरी देवी राजकीय स्नातकोत्तर कन्या महाविद्यालय, भरतपुर (राजस्थान)

## सारांश

डिजिटल भारत के तीव्र विकास ने भारतीय समाज की संरचना, संचार प्रणाली तथा सामाजिक संबंधों के स्वरूप में व्यापक परिवर्तन उत्पन्न किए हैं। विशेष रूप से सोशल मीडिया प्लेटफॉर्म ने युवाओं के व्यवहार, विचार, जीवनशैली तथा सामाजिक सहभागिता को गहराई से प्रभावित किया है। प्रस्तुत शोध आलेख "डिजिटल भारत और बदलते सामाजिक सम्बन्ध: सोशल मीडिया के संदर्भ में युवाओं के व्यवहार का समाजशास्त्रीय अध्ययन" का उद्देश्य यह विश्लेषण करना है कि सोशल मीडिया युवाओं के सामाजिक संबंधों, पारिवारिक संवाद, सांस्कृतिक मूल्यों तथा सामाजिक सहभागिता को किस प्रकार परिवर्तित कर रहा है। अध्ययन में यह देखा गया है कि फेसबुक, इंस्टाग्राम, एक्स, व्हाट्सएप तथा यूट्यूब जैसे डिजिटल माध्यम युवाओं को वैश्विक स्तर पर जोड़ने के साथ-साथ आभासी संबंधों की प्रवृत्ति को भी बढ़ावा दे रहे हैं। इसके परिणामस्वरूप प्रत्यक्ष सामाजिक संवाद में कमी, अकेलेपन की भावना, आत्म-अभिव्यक्ति के नए रूप तथा पहचान निर्माण की नई प्रक्रियाएँ विकसित हो रही हैं। यह शोध समाजशास्त्रीय दृष्टिकोण से डिजिटल संस्कृति, तकनीकी आधुनिकीकरण तथा युवा पीढ़ी के बदलते व्यवहारिक प्रतिमानों का विश्लेषण प्रस्तुत करता है। अध्ययन यह निष्कर्ष देता है कि सोशल मीडिया ने सामाजिक संबंधों को अधिक व्यापक, त्वरित एवं गतिशील बनाया है, किंतु इसके साथ सामाजिक दूरी, मानसिक दबाव तथा सांस्कृतिक परिवर्तन जैसी चुनौतियाँ भी उत्पन्न हुई हैं।

**मुख्य शब्द:** डिजिटल भारत, सोशल मीडिया, युवा व्यवहार, सामाजिक संबंध, समाजशास्त्रीय अध्ययन, डिजिटल संस्कृति, तकनीकी परिवर्तन, आभासी संवाद।

## 1. भूमिका

इक्कीसवीं सदी में डिजिटल तकनीक ने मानव जीवन के प्रत्येक क्षेत्र को गहराई से प्रभावित किया है। सूचना एवं संचार प्रौद्योगिकी के तीव्र विकास ने सामाजिक संरचना, सांस्कृतिक प्रक्रियाओं तथा मानवीय संबंधों के स्वरूप में व्यापक परिवर्तन उत्पन्न किए हैं। भारत जैसे विकासशील देश में डिजिटल परिवर्तन केवल तकनीकी उन्नति का प्रतीक नहीं है, बल्कि यह सामाजिक, आर्थिक, शैक्षिक और सांस्कृतिक परिवर्तन का भी महत्वपूर्ण माध्यम बन गया है। भारत सरकार द्वारा प्रारम्भ किया गया "डिजिटल भारत" अभियान देश को तकनीकी रूप से सशक्त समाज और ज्ञान-आधारित अर्थव्यवस्था में परिवर्तित करने की दिशा में एक महत्वपूर्ण पहल माना जाता है (भारत सरकार, 2015)। इस अभियान के परिणामस्वरूप इंटरनेट, स्मार्टफोन तथा डिजिटल सेवाओं का उपयोग ग्रामीण और शहरी दोनों क्षेत्रों में तीव्र गति से बढ़ा है। डिजिटल माध्यमों ने संचार, शिक्षा, व्यापार, प्रशासन तथा सामाजिक सहभागिता के पारंपरिक स्वरूप को परिवर्तित कर दिया है, जिसके कारण भारतीय समाज एक नवीन डिजिटल संस्कृति की ओर अग्रसर हुआ है।

सूचना एवं संचार प्रौद्योगिकी के विस्तार ने सामाजिक जीवन की संरचना और कार्यप्रणाली को नए आयाम प्रदान किए हैं। इंटरनेट और मोबाइल तकनीक ने समय और दूरी की सीमाओं को कम करते हुए व्यक्तियों को वैश्विक स्तर पर जोड़ने का कार्य किया है। आधुनिक समाज में डिजिटल नेटवर्क सामाजिक संगठन और संचार के प्रमुख आधार बन चुके हैं (कास्टेल्स, 2010)। वर्तमान समय में सामाजिक संवाद का स्वरूप तेजी से डिजिटल माध्यमों की ओर परिवर्तित हो रहा है, जहाँ प्रत्यक्ष संवाद की अपेक्षा ऑनलाइन संचार और वर्चुअल सहभागिता अधिक प्रभावशाली होती जा रही है। भारत में सस्ते इंटरनेट डेटा, स्मार्टफोन की बढ़ती उपलब्धता तथा डिजिटल प्लेटफॉर्मों के प्रसार ने युवाओं को इस परिवर्तन के केंद्र में स्थापित कर दिया है। विशेष रूप से कोविड-19 महामारी के पश्चात डिजिटल माध्यमों के उपयोग में अभूतपूर्व वृद्धि देखी गई, जिसने शिक्षा, कार्य-संस्कृति और सामाजिक संबंधों के स्वरूप को गहराई से प्रभावित किया (कुमार एवं नंदा, 2020)। इस परिवर्तन ने सामाजिक संबंधों के निर्माण, संवाद की प्रक्रिया तथा सामुदायिक जीवन की प्रकृति को नए रूप में परिभाषित किया है।

सोशल मीडिया आधुनिक डिजिटल संस्कृति का सबसे प्रभावशाली और व्यापक माध्यम बनकर उभरा है। फेसबुक, इंस्टाग्राम, व्हाट्सएप, एक्स (पूर्व में ट्विटर), यूट्यूब तथा अन्य डिजिटल प्लेटफॉर्म आज केवल मनोरंजन या सूचना आदान-प्रदान तक सीमित नहीं हैं, बल्कि वे सामाजिक सहभागिता, विचार अभिव्यक्ति, राजनीतिक चेतना और सांस्कृतिक आदान-प्रदान के प्रमुख साधन बन चुके हैं। सोशल मीडिया ने संचार प्रक्रिया को लोकतांत्रिक स्वरूप प्रदान किया है, जहाँ प्रत्येक व्यक्ति सूचना का उपभोक्ता होने के साथ-साथ उसका उत्पादक भी बन गया है (कापलान एवं हैनलेन, 2010)। इन प्लेटफॉर्मों ने व्यक्तियों को वैश्विक समुदाय से जोड़ने, नए सामाजिक संबंध स्थापित करने तथा अपनी पहचान को प्रस्तुत करने का अवसर प्रदान किया है। परिणामस्वरूप आभासी संबंधों और डिजिटल समुदायों का विकास तेजी से हुआ है। वर्तमान समय में सोशल मीडिया सामाजिक जीवन का अभिन्न अंग बन चुका है, जिसने मानवीय संबंधों, सांस्कृतिक मूल्यों तथा सामुदायिक संरचनाओं को व्यापक रूप से प्रभावित किया है।

भारतीय युवाओं पर डिजिटल माध्यमों का प्रभाव विशेष रूप से उल्लेखनीय है, क्योंकि युवा वर्ग सोशल मीडिया का सबसे सक्रिय और प्रभावग्राही उपभोक्ता माना जाता है। युवाओं की जीवनशैली, व्यवहार, भाषा, मनोरंजन, शिक्षा, राजनीतिक दृष्टिकोण तथा सामाजिक सहभागिता पर सोशल मीडिया का व्यापक प्रभाव देखा जा सकता है। डिजिटल प्लेटफॉर्म युवाओं को आत्म-अभिव्यक्ति, रचनात्मकता तथा वैश्विक संपर्क के नए अवसर प्रदान करते हैं, किंतु इसके साथ अनेक सामाजिक और मनोवैज्ञानिक चुनौतियाँ भी उत्पन्न होती हैं। अत्यधिक सोशल मीडिया उपयोग के कारण मानसिक तनाव, सामाजिक अलगाव, आभासी निर्भरता, साइबर बुलिंग तथा डिजिटल लत जैसी समस्याएँ तेजी से बढ़ रही हैं (टर्कल, 2011)। इसके अतिरिक्त, ऑनलाइन लोकप्रियता प्राप्त करने की प्रवृत्ति युवाओं के व्यवहार और सामाजिक संबंधों को प्रभावित कर रही है। पारंपरिक भारतीय समाज में परिवार और प्रत्यक्ष सामाजिक संवाद को अत्यधिक महत्व दिया जाता रहा है, किंतु डिजिटल संस्कृति के विस्तार के कारण सामाजिक संबंधों की प्रकृति में परिवर्तन दिखाई देने लगा है। अब युवा वर्ग प्रत्यक्ष सामाजिक सहभागिता की अपेक्षा आभासी संवाद को अधिक प्राथमिकता देने लगा है, जिसके परिणामस्वरूप सामाजिक संरचना और सांस्कृतिक मूल्यों में परिवर्तन की प्रक्रिया तीव्र हुई है।

प्रस्तुत शोध विषय "डिजिटल भारत और बदलते सामाजिक सम्बन्ध: सोशल मीडिया के संदर्भ में युवाओं के व्यवहार का समाजशास्त्रीय अध्ययन" वर्तमान समय में अत्यंत प्रासंगिक और समकालीन महत्व का विषय है। डिजिटल क्रांति ने जहाँ सामाजिक जीवन को अधिक गतिशील, त्वरित और वैश्विक बनाया है, वहीं इसके कारण सामाजिक संबंधों, सांस्कृतिक मूल्यों और व्यक्तिगत व्यवहार में भी महत्वपूर्ण परिवर्तन उत्पन्न हुए हैं। यह शोध सोशल मीडिया के माध्यम से युवाओं के व्यवहार और सामाजिक संबंधों में आए परिवर्तनों का समाजशास्त्रीय विश्लेषण प्रस्तुत करने का प्रयास करेगा। साथ ही यह अध्ययन डिजिटल संस्कृति के सकारात्मक और नकारात्मक दोनों प्रभावों को समझने का प्रयास करेगा, ताकि यह स्पष्ट किया जा सके कि आधुनिक डिजिटल युग में सोशल मीडिया किस प्रकार सामाजिक जीवन और युवा पीढ़ी की मानसिकता को पुनर्परिभाषित कर रहा है। वर्तमान परिस्थितियों में इस प्रकार का अध्ययन समाज, शिक्षा, संस्कृति तथा युवा नीति के संदर्भ में अत्यंत आवश्यक और उपयोगी सिद्ध होता है।

## 2. डिजिटल भारत: अवधारणा और विकास

इक्कीसवीं सदी में सूचना एवं संचार प्रौद्योगिकी के तीव्र विकास ने विश्व व्यवस्था को एक नए डिजिटल युग में प्रवेश कराया है। इस परिवर्तनशील परिदृश्य में भारत ने भी तकनीकी विकास को सामाजिक और आर्थिक प्रगति के एक महत्वपूर्ण साधन के रूप में स्वीकार किया है। “डिजिटल भारत” की अवधारणा इसी व्यापक परिवर्तन की उपज है, जिसका उद्देश्य भारत को डिजिटल रूप से सशक्त समाज तथा ज्ञान-आधारित अर्थव्यवस्था में परिवर्तित करना है। भारत सरकार द्वारा वर्ष 2015 में प्रारम्भ किया गया “डिजिटल भारत अभियान” प्रशासनिक पारदर्शिता, डिजिटल सेवाओं की पहुँच, इंटरनेट कनेक्टिविटी और तकनीकी सशक्तिकरण को बढ़ावा देने की दिशा में एक महत्वपूर्ण पहल माना जाता है (भारत सरकार, 2015)। इस अभियान के माध्यम से शासन और नागरिकों के मध्य डिजिटल संपर्क को सुदृढ़ करने, ग्रामीण क्षेत्रों में इंटरनेट सुविधाओं का विस्तार करने तथा डिजिटल साक्षरता को बढ़ावा देने का प्रयास किया गया। डिजिटल भारत का मूल उद्देश्य केवल तकनीकी ढाँचे का विकास नहीं है, बल्कि यह सामाजिक समावेशन, आर्थिक सशक्तिकरण और ज्ञान आधारित समाज की स्थापना से भी जुड़ा हुआ है।

डिजिटल भारत अभियान ने भारतीय समाज में तकनीकी चेतना और डिजिटल सहभागिता को व्यापक स्तर पर बढ़ावा दिया है। इस पहल के अंतर्गत ई-गवर्नेंस, डिजिटल भुगतान, ऑनलाइन शिक्षा, ई-हेल्थ सेवाएँ तथा डिजिटल बैंकिंग जैसी व्यवस्थाओं को प्रोत्साहित किया गया, जिससे नागरिक जीवन अधिक सुविधाजनक और त्वरित हुआ है। ग्रामीण भारत में कॉमन सर्विस सेंटर, भारतनेट परियोजना तथा डिजिटल साक्षरता अभियानों के माध्यम से तकनीकी सुविधाओं को आम जनता तक पहुँचाने का प्रयास किया गया। इसके परिणामस्वरूप डिजिटल तकनीक केवल शहरी वर्ग तक सीमित न रहकर ग्रामीण क्षेत्रों में भी सामाजिक परिवर्तन का माध्यम बनी है। डिजिटल प्लेटफॉर्मों ने नागरिकों को प्रशासनिक सेवाओं तक सरल पहुँच प्रदान की है, जिससे पारदर्शिता और उत्तरदायित्व की भावना को भी बल मिला है। इस प्रकार डिजिटल भारत अभियान ने भारतीय समाज को तकनीकी रूप से अधिक सक्रिय, जागरूक और सहभागितापूर्ण बनाने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाई है।

भारत में इंटरनेट और स्मार्टफोन उपयोग का विस्तार डिजिटल परिवर्तन की प्रक्रिया का सबसे महत्वपूर्ण आधार माना जाता है। पिछले एक दशक में इंटरनेट उपभोक्ताओं की संख्या में तीव्र वृद्धि हुई है, जिसके कारण डिजिटल संचार और ऑनलाइन गतिविधियाँ सामाजिक जीवन का अभिन्न हिस्सा बन गई हैं। सस्ते डेटा पैक, स्मार्टफोन की सुलभता तथा दूरसंचार सेवाओं के विस्तार ने डिजिटल माध्यमों को समाज के विभिन्न वर्गों तक पहुँचाया है। आज ग्रामीण और शहरी दोनों क्षेत्रों में युवा वर्ग इंटरनेट और सोशल मीडिया का सक्रिय उपयोग कर रहा है। डिजिटल उपकरणों ने शिक्षा, मनोरंजन, व्यापार और सामाजिक संपर्क के स्वरूप को परिवर्तित कर दिया है। विशेष रूप से कोविड-19 महामारी के दौरान ऑनलाइन शिक्षा, वर्क फ्रॉम होम तथा डिजिटल संवाद की आवश्यकता ने इंटरनेट उपयोग को अभूतपूर्व रूप से बढ़ा दिया (कुमार एवं नंदा, 2020)। इस परिवर्तन ने समाज में डिजिटल निर्भरता को और अधिक गहरा किया है। स्मार्टफोन अब केवल संचार का माध्यम नहीं रह गया है, बल्कि यह सामाजिक पहचान, सूचना प्राप्ति और मनोरंजन का प्रमुख साधन बन चुका है।

डिजिटल संचार ने सामाजिक संबंधों और मानवीय व्यवहार में व्यापक परिवर्तन उत्पन्न किए हैं। इंटरनेट और सोशल मीडिया प्लेटफॉर्मों ने संचार प्रक्रिया को त्वरित, वैश्विक और बहुआयामी बना दिया है। अब व्यक्ति भौगोलिक दूरी की सीमाओं को पार करते हुए विश्व के किसी भी हिस्से में तत्काल संवाद स्थापित कर सकता है। डिजिटल संचार ने पारंपरिक सामाजिक संरचनाओं और संवाद पद्धतियों को परिवर्तित करते हुए एक नई “आभासी सामाजिकता” को जन्म दिया है (कास्टेल्स, 2010)। वर्तमान समय में सोशल मीडिया, वीडियो कॉल, ऑनलाइन समुदाय और डिजिटल नेटवर्क सामाजिक संबंधों के निर्माण और अभिव्यक्ति के प्रमुख माध्यम बन चुके हैं। इस परिवर्तन ने सामाजिक सहभागिता को अधिक व्यापक और गतिशील बनाया है, किंतु इसके साथ प्रत्यक्ष संवाद में कमी, सामाजिक अलगाव तथा आभासी निर्भरता जैसी समस्याएँ भी उभरकर सामने आई हैं। डिजिटल माध्यमों ने व्यक्ति की सामाजिक पहचान, अभिव्यक्ति और सामुदायिक जीवन को पुनर्परिभाषित किया है, जिसके कारण सामाजिक मूल्यों और व्यवहारों में निरंतर परिवर्तन देखा जा रहा है।

तकनीकी आधुनिकीकरण और वैश्वीकरण की प्रक्रिया ने डिजिटल संस्कृति को और अधिक सशक्त बनाया है। वैश्वीकरण के प्रभाव से विश्व के विभिन्न समाज आपस में अधिक निकट आए हैं, जिसके परिणामस्वरूप सांस्कृतिक

आदान-प्रदान, उपभोक्तावाद तथा आधुनिक जीवनशैली का प्रसार बढ़ा है। डिजिटल तकनीक इस वैश्विक प्रक्रिया का प्रमुख माध्यम बन गई है। इंटरनेट और सोशल मीडिया के माध्यम से व्यक्ति वैश्विक संस्कृति, विचारधाराओं और जीवनशैलियों से प्रत्यक्ष रूप से जुड़ने लगा है। विशेष रूप से युवा वर्ग पर वैश्विक डिजिटल संस्कृति का प्रभाव स्पष्ट रूप से दिखाई देता है, जहाँ फैशन, भाषा, मनोरंजन और सामाजिक व्यवहार में वैश्विक प्रवृत्तियों का प्रभाव बढ़ता जा रहा है। तकनीकी आधुनिकीकरण ने जहाँ विकास और प्रगति के नए अवसर प्रदान किए हैं, वहीं इसके कारण पारंपरिक सामाजिक मूल्यों, सांस्कृतिक पहचान और पारिवारिक संरचनाओं पर भी प्रभाव पड़ा है (गिडेन्स, 1991)। इस प्रकार डिजिटल भारत की अवधारणा केवल तकनीकी परिवर्तन तक सीमित नहीं है, बल्कि यह सामाजिक संरचना, सांस्कृतिक चेतना और मानवीय संबंधों के व्यापक रूपांतरण से भी गहराई से जुड़ी हुई है।

### 3. सोशल मीडिया : स्वरूप और सामाजिक प्रभाव

आधुनिक डिजिटल युग में सोशल मीडिया संचार और सामाजिक सहभागिता का सबसे प्रभावशाली माध्यम बनकर उभरा है। सूचना एवं संचार प्रौद्योगिकी के विकास ने जिस डिजिटल संस्कृति को जन्म दिया है, उसमें सोशल मीडिया की भूमिका केंद्रीय मानी जाती है। वर्तमान समय में सोशल मीडिया केवल मनोरंजन या व्यक्तिगत संवाद का माध्यम नहीं रह गया है, बल्कि यह सामाजिक, सांस्कृतिक, राजनीतिक और आर्थिक गतिविधियों का भी महत्वपूर्ण आधार बन चुका है। सोशल मीडिया ने संचार की पारंपरिक अवधारणाओं को परिवर्तित करते हुए व्यक्तियों को वैश्विक स्तर पर जोड़ने का कार्य किया है। इसके माध्यम से व्यक्ति न केवल विचारों और सूचनाओं का आदान-प्रदान करता है, बल्कि वह अपनी पहचान, विचारधारा और सामाजिक उपस्थिति को भी अभिव्यक्त करता है। डिजिटल समाज में सोशल मीडिया ने एक ऐसे आभासी सार्वजनिक क्षेत्र का निर्माण किया है, जहाँ सामाजिक संवाद, विमर्श और सहभागिता निरंतर सक्रिय रहती है।

सोशल मीडिया की परिभाषा विभिन्न विद्वानों द्वारा अलग-अलग रूपों में प्रस्तुत की गई है, किंतु सामान्यतः इसे इंटरनेट आधारित ऐसे डिजिटल प्लेटफॉर्मों के रूप में समझा जाता है, जो उपयोगकर्ताओं को सामग्री निर्माण, साझा करने और आपसी संवाद की सुविधा प्रदान करते हैं। सोशल मीडिया की सबसे महत्वपूर्ण विशेषता इसकी सहभागितापूर्ण प्रकृति है, जहाँ प्रत्येक उपयोगकर्ता सूचना का उपभोक्ता होने के साथ-साथ उसका उत्पादक भी बन जाता है (कापलान एवं हैनलेन, 2010)। सोशल मीडिया के अनेक प्रकार हैं, जिनमें सोशल नेटवर्किंग साइट्स, ब्लॉग, माइक्रोब्लॉगिंग प्लेटफॉर्म, वीडियो शेयरिंग प्लेटफॉर्म, मैसेजिंग एप्लिकेशन तथा ऑनलाइन समुदाय प्रमुख हैं। फेसबुक और इंस्टाग्राम जैसे प्लेटफॉर्म सामाजिक नेटवर्किंग के प्रमुख उदाहरण हैं, जहाँ व्यक्ति अपनी व्यक्तिगत गतिविधियों, विचारों और अनुभवों को साझा करता है। एक्स (पूर्व में ट्विटर) माइक्रोब्लॉगिंग का माध्यम है, जो संक्षिप्त विचार अभिव्यक्ति और त्वरित संवाद के लिए प्रसिद्ध है। यूट्यूब वीडियो आधारित सामग्री के प्रसार का प्रमुख मंच है, जबकि व्हाट्सएप व्यक्तिगत तथा सामूहिक संवाद का सबसे व्यापक डिजिटल माध्यम बन चुका है। इन सभी प्लेटफॉर्मों ने संचार प्रक्रिया को अधिक त्वरित, वैश्विक और प्रभावशाली बनाया है।

फेसबुक, इंस्टाग्राम, व्हाट्सएप, एक्स तथा यूट्यूब जैसे सोशल मीडिया प्लेटफॉर्म आधुनिक समाज में बहुआयामी भूमिका निभा रहे हैं। फेसबुक ने सामाजिक नेटवर्किंग और डिजिटल समुदायों के निर्माण को नई दिशा प्रदान की है, जहाँ व्यक्ति मित्रता, समूह सहभागिता और सामाजिक संवाद के माध्यम से अपने संबंधों को बनाए रखता है। इंस्टाग्राम ने दृश्य संस्कृति (Visual Culture) को बढ़ावा देते हुए छवियों, रील्स और वीडियो के माध्यम से आत्म-अभिव्यक्ति के नए स्वरूप विकसित किए हैं। विशेष रूप से युवा वर्ग इंस्टाग्राम को अपनी पहचान, जीवनशैली और लोकप्रियता प्रदर्शित करने के प्रमुख माध्यम के रूप में उपयोग करता है। व्हाट्सएप ने व्यक्तिगत संवाद को अत्यंत सरल और त्वरित बना दिया है, जिसके कारण पारिवारिक, शैक्षिक और व्यावसायिक संचार का स्वरूप बदल गया है। इसके माध्यम से व्यक्ति व्यक्तिगत संदेशों, वीडियो कॉल और समूह संवाद के जरिए निरंतर संपर्क में रहता है। इसी प्रकार एक्स सामाजिक और राजनीतिक विमर्श का महत्वपूर्ण मंच बन गया है, जहाँ समाचार, विचार और जनचर्चाएँ तीव्र गति से प्रसारित होती हैं। यूट्यूब ने शिक्षा, मनोरंजन, पत्रकारिता और डिजिटल उद्यमिता को नई दिशा प्रदान की है, जिसके कारण व्यक्ति अब पारंपरिक मीडिया पर पूर्णतः निर्भर नहीं रहा। इन प्लेटफॉर्मों ने सामाजिक जीवन को

अधिक गतिशील और संवादपरक बनाया है, किंतु इसके साथ सामाजिक तुलना, डिजिटल प्रतिस्पर्धा और आभासी निर्भरता जैसी समस्याएँ भी बढ़ी हैं।

सोशल मीडिया ने सूचना विनिमय की प्रक्रिया को अत्यंत तीव्र और व्यापक बना दिया है। पारंपरिक संचार माध्यमों की तुलना में सोशल मीडिया अधिक लोकतांत्रिक और सहभागितापूर्ण है, जहाँ सूचना का प्रवाह एकतरफा न होकर बहुआयामी होता है। अब व्यक्ति केवल समाचार प्राप्त करने तक सीमित नहीं है, बल्कि वह स्वयं भी सूचनाओं का निर्माण और प्रसार कर सकता है। सोशल मीडिया ने डिजिटल समुदायों और आभासी समूहों के निर्माण को प्रोत्साहित किया है, जहाँ समान रुचियों, विचारों और उद्देश्यों वाले लोग एक-दूसरे से जुड़ते हैं। इन आभासी समुदायों ने सामाजिक सहभागिता और सामुदायिक चेतना के नए रूप विकसित किए हैं। वर्तमान समय में शिक्षा, स्वास्थ्य, रोजगार, राजनीति, मनोरंजन और सामाजिक आंदोलनों से संबंधित समुदाय सोशल मीडिया के माध्यम से सक्रिय रूप से कार्य कर रहे हैं। डिजिटल नेटवर्क ने सामाजिक संबंधों की परंपरागत सीमाओं को तोड़ते हुए वैश्विक स्तर पर सहभागिता को संभव बनाया है (कास्टेल्स, 2010)। इसके परिणामस्वरूप व्यक्ति की सामाजिक पहचान और सामुदायिक अनुभव अब केवल भौतिक समाज तक सीमित नहीं रहे, बल्कि वे आभासी संसार में भी विस्तारित हो गए हैं। हालाँकि, आभासी समुदायों की बढ़ती भूमिका के कारण प्रत्यक्ष सामाजिक संबंधों में कमी तथा सामाजिक अलगाव की समस्या भी उभरकर सामने आई है।

सोशल मीडिया आधुनिक समाज में जनमत निर्माण का अत्यंत प्रभावशाली माध्यम बन गया है। राजनीतिक, सामाजिक और सांस्कृतिक मुद्दों पर जनचेतना और सार्वजनिक विमर्श के निर्माण में सोशल मीडिया की भूमिका निरंतर बढ़ती जा रही है। वर्तमान समय में समाचारों, विचारों और अभियानों का प्रसार सोशल मीडिया के माध्यम से अत्यंत तीव्र गति से होता है। सामाजिक आंदोलनों, राजनीतिक अभियानों और जनजागरूकता कार्यक्रमों में सोशल मीडिया ने महत्वपूर्ण भूमिका निभाई है। अरब स्प्रिंग आंदोलन से लेकर भारत में विभिन्न सामाजिक अभियानों तक सोशल मीडिया ने जनसमर्थन और सामूहिक चेतना के निर्माण में प्रभावी योगदान दिया है। इसके माध्यम से व्यक्ति अपनी राय व्यक्त करने, सामाजिक मुद्दों पर चर्चा करने और सामूहिक भागीदारी सुनिश्चित करने में सक्षम हुआ है। सोशल मीडिया ने पारंपरिक मीडिया की एकाधिकारवादी प्रवृत्ति को चुनौती देते हुए वैकल्पिक अभिव्यक्ति के मंच उपलब्ध कराए हैं। किंतु इसके साथ फेक न्यूज, अफवाहों, ट्रोलिंग और दुष्प्रचार जैसी समस्याएँ भी गंभीर रूप से सामने आई हैं, जो सामाजिक तनाव और भ्रम की स्थिति उत्पन्न करती हैं। डिजिटल माध्यमों द्वारा निर्मित जनमत कभी-कभी वास्तविक तथ्यों की अपेक्षा भावनात्मक प्रतिक्रियाओं पर आधारित होता है, जिसके कारण सामाजिक और राजनीतिक ध्रुवीकरण की प्रवृत्ति भी बढ़ती दिखाई देती है (हैबरमास, 1989)। इस प्रकार सोशल मीडिया आधुनिक समाज में संवाद, सूचना और जनमत निर्माण का अत्यंत प्रभावशाली माध्यम बन चुका है, जिसने सामाजिक संरचना और मानवीय व्यवहार को गहराई से प्रभावित किया है।

#### **4. सोशल मीडिया के सकारात्मक प्रभाव**

आधुनिक डिजिटल युग में सोशल मीडिया केवल मनोरंजन और संवाद का माध्यम नहीं रह गया है, बल्कि यह सामाजिक, शैक्षिक, आर्थिक और सांस्कृतिक विकास का एक महत्वपूर्ण उपकरण बन चुका है। सूचना एवं संचार प्रौद्योगिकी के विस्तार ने सोशल मीडिया को समाज के प्रत्येक वर्ग तक पहुँचाया है, जिसके परिणामस्वरूप यह दैनिक जीवन का अभिन्न हिस्सा बन गया है। विशेष रूप से युवा वर्ग सोशल मीडिया का उपयोग केवल सामाजिक संपर्क के लिए ही नहीं, बल्कि ज्ञान अर्जन, कौशल विकास, सामाजिक जागरूकता तथा व्यावसायिक अवसरों की प्राप्ति के लिए भी कर रहा है। डिजिटल माध्यमों ने सूचना के प्रवाह को अधिक त्वरित, व्यापक और सुलभ बनाया है, जिसके कारण सामाजिक जीवन में अनेक सकारात्मक परिवर्तन दिखाई देते हैं। सोशल मीडिया ने व्यक्ति को वैश्विक समाज से जोड़ते हुए नए विचारों, संस्कृतियों और अवसरों तक पहुँच प्रदान की है। इसके माध्यम से शिक्षा, रोजगार, सामाजिक सहभागिता और सांस्कृतिक आदान-प्रदान के नए आयाम विकसित हुए हैं, जिन्होंने आधुनिक समाज को अधिक गतिशील और जागरूक बनाने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाई है।

सोशल मीडिया का सबसे महत्वपूर्ण सकारात्मक प्रभाव सूचना और ज्ञान तक आसान पहुँच के रूप में देखा जा सकता है। पहले ज्ञान और सूचना तक पहुँच सीमित संसाधनों और पारंपरिक माध्यमों पर निर्भर थी, किंतु डिजिटल

प्लेटफॉर्मों ने इस स्थिति को पूरी तरह परिवर्तित कर दिया है। आज व्यक्ति किसी भी विषय से संबंधित जानकारी कुछ ही क्षणों में प्राप्त कर सकता है। फेसबुक, यूट्यूब, टेलीग्राम, व्हाट्सएप तथा अन्य डिजिटल माध्यमों के जरिए समाचार, शैक्षिक सामग्री, शोध, तकनीकी जानकारी और समसामयिक घटनाओं की जानकारी व्यापक रूप से उपलब्ध हो रही है। सोशल मीडिया ने ज्ञान के लोकतंत्रीकरण की प्रक्रिया को सशक्त बनाया है, जहाँ सूचना केवल कुछ विशेष वर्गों तक सीमित न रहकर सामान्य जनता तक पहुँच रही है। विशेष रूप से ग्रामीण और दूरस्थ क्षेत्रों में सोशल मीडिया ने सूचना प्रसार का प्रभावी माध्यम बनकर लोगों को शिक्षा, स्वास्थ्य, कृषि और सरकारी योजनाओं से संबंधित जानकारी उपलब्ध कराई है। इस प्रकार सोशल मीडिया ने ज्ञान और सूचना तक पहुँच को अधिक सरल, त्वरित और समावेशी बनाया है।

शिक्षा और कौशल विकास के क्षेत्र में भी सोशल मीडिया की भूमिका अत्यंत महत्वपूर्ण सिद्ध हुई है। डिजिटल प्लेटफॉर्मों ने पारंपरिक शिक्षा प्रणाली के साथ-साथ ऑनलाइन शिक्षा और ई-लर्निंग को बढ़ावा दिया है। यूट्यूब, गूगल मीट, ऑनलाइन कोर्स प्लेटफॉर्म तथा सोशल मीडिया समूहों के माध्यम से विद्यार्थी और युवा वर्ग विभिन्न विषयों से संबंधित ज्ञान और प्रशिक्षण प्राप्त कर रहे हैं। कोविड-19 महामारी के दौरान सोशल मीडिया और डिजिटल तकनीक ने शिक्षा को निरंतर बनाए रखने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाई। ऑनलाइन कक्षाओं, वेबिनार, डिजिटल नोट्स और शैक्षिक वीडियो के माध्यम से शिक्षा का स्वरूप अधिक लचीला और सुलभ हुआ। इसके अतिरिक्त सोशल मीडिया ने तकनीकी, भाषाई, रचनात्मक और व्यावसायिक कौशलों के विकास के लिए भी नए अवसर प्रदान किए हैं। आज अनेक युवा डिजिटल मार्केटिंग, ग्राफिक डिजाइनिंग, कंटेंट क्रिएशन, वीडियो एडिटिंग तथा प्रोग्रामिंग जैसे कौशल सोशल मीडिया और ऑनलाइन प्लेटफॉर्मों के माध्यम से सीख रहे हैं। इस प्रकार सोशल मीडिया ने शिक्षा और आत्म-विकास की प्रक्रिया को अधिक लोकतांत्रिक और व्यावहारिक बनाया है।

सामाजिक जागरूकता और सामाजिक सहभागिता को बढ़ाने में भी सोशल मीडिया की भूमिका अत्यंत प्रभावशाली रही है। सोशल मीडिया प्लेटफॉर्मों ने सामाजिक मुद्दों, जनआंदोलनों और जागरूकता अभियानों को व्यापक जनसमर्थन प्रदान किया है। पर्यावरण संरक्षण, महिला अधिकार, शिक्षा, स्वास्थ्य, लैंगिक समानता तथा मानवाधिकार जैसे विषयों पर सोशल मीडिया ने समाज में जागरूकता फैलाने का महत्वपूर्ण कार्य किया है। वर्तमान समय में सामाजिक और राजनीतिक मुद्दों पर जनमत निर्माण तथा जनसहभागिता में सोशल मीडिया की भूमिका निरंतर बढ़ रही है। युवा वर्ग सोशल मीडिया के माध्यम से सामाजिक अभियानों, जनहित आंदोलनों और सामुदायिक गतिविधियों में सक्रिय रूप से भाग लेने लगा है। डिजिटल प्लेटफॉर्मों ने व्यक्तियों को अपनी राय व्यक्त करने और सामाजिक समस्याओं के प्रति जागरूक होने का अवसर प्रदान किया है। इसके माध्यम से समाज के विभिन्न वर्गों के बीच संवाद और सहभागिता को भी बढ़ावा मिला है। सोशल मीडिया ने सामाजिक चेतना को अधिक व्यापक और सक्रिय बनाने में महत्वपूर्ण योगदान दिया है।

रोजगार और उद्यमिता के क्षेत्र में भी सोशल मीडिया ने नई संभावनाओं का निर्माण किया है। डिजिटल प्लेटफॉर्मों ने रोजगार के पारंपरिक स्वरूप को परिवर्तित करते हुए ऑनलाइन कार्य संस्कृति और डिजिटल उद्यमिता को बढ़ावा दिया है। आज अनेक युवा सोशल मीडिया के माध्यम से स्वरोजगार और ऑनलाइन व्यवसाय की ओर अग्रसर हो रहे हैं। यूट्यूब, इंस्टाग्राम और फेसबुक जैसे प्लेटफॉर्म कंटेंट क्रिएटर्स, ब्लॉगर्स, इन्फ्लुएंसर्स तथा डिजिटल उद्यमियों के लिए आय और पहचान का महत्वपूर्ण स्रोत बन चुके हैं। इसके अतिरिक्त सोशल मीडिया के माध्यम से कंपनियाँ रोजगार संबंधी सूचनाएँ और अवसर उपलब्ध कराती हैं, जिससे युवाओं को करियर निर्माण में सहायता मिलती है। डिजिटल मार्केटिंग, फ्रीलांसिंग, ई-कॉमर्स और ऑनलाइन सेवाओं के क्षेत्र में सोशल मीडिया ने लाखों युवाओं को नए रोजगार अवसर प्रदान किए हैं। छोटे व्यवसाय और स्थानीय उद्यम भी सोशल मीडिया के माध्यम से अपने उत्पादों और सेवाओं का प्रचार-प्रसार कर वैश्विक बाजार तक पहुँच बना रहे हैं। इस प्रकार सोशल मीडिया आर्थिक सशक्तिकरण और आत्मनिर्भरता का एक महत्वपूर्ण माध्यम बनकर उभरा है।

वैश्विक संपर्क और सांस्कृतिक आदान-प्रदान के क्षेत्र में भी सोशल मीडिया की भूमिका अत्यंत महत्वपूर्ण है। डिजिटल माध्यमों ने विश्व के विभिन्न समाजों और संस्कृतियों को एक-दूसरे के निकट लाने का कार्य किया है। सोशल मीडिया के माध्यम से व्यक्ति विभिन्न देशों की भाषा, संस्कृति, कला, संगीत, परंपराओं और जीवनशैली से परिचित होता है। इस प्रक्रिया ने वैश्विक दृष्टिकोण और बहुसांस्कृतिक चेतना को विकसित करने में सहायता प्रदान की है। युवा वर्ग

सोशल मीडिया के माध्यम से अंतरराष्ट्रीय समुदायों और वैश्विक संवाद का हिस्सा बन रहा है, जिसके कारण सांस्कृतिक आदान-प्रदान और पारस्परिक समझ को बढ़ावा मिला है। इसके अतिरिक्त सोशल मीडिया ने विभिन्न संस्कृतियों के बीच सहयोग, सहिष्णुता और संवाद की भावना को भी सशक्त किया है। हालाँकि वैश्वीकरण के प्रभाव से स्थानीय संस्कृतियों और पारंपरिक मूल्यों पर चुनौतियाँ भी उत्पन्न हुई हैं, फिर भी सोशल मीडिया ने विश्व को एक वैश्विक समुदाय के रूप में जोड़ने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाई है। इस प्रकार सोशल मीडिया आधुनिक समाज में ज्ञान, शिक्षा, सामाजिक जागरूकता, आर्थिक अवसर और सांस्कृतिक संवाद का एक प्रभावशाली एवं सकारात्मक माध्यम सिद्ध हुआ है।

### 5. सोशल मीडिया के नकारात्मक प्रभाव

सोशल मीडिया ने आधुनिक समाज को संचार, सूचना और वैश्विक संपर्क के अनेक अवसर प्रदान किए हैं, किंतु इसके साथ अनेक सामाजिक, मनोवैज्ञानिक और सांस्कृतिक चुनौतियाँ भी उत्पन्न हुई हैं। डिजिटल तकनीक के अत्यधिक विस्तार ने विशेष रूप से युवा वर्ग के जीवन और व्यवहार को गहराई से प्रभावित किया है। वर्तमान समय में सोशल मीडिया का उपयोग केवल संवाद और मनोरंजन तक सीमित नहीं रहा, बल्कि यह व्यक्ति की दिनचर्या, मानसिक स्थिति, सामाजिक संबंधों और जीवनशैली का महत्वपूर्ण हिस्सा बन गया है। सोशल मीडिया के अत्यधिक उपयोग ने जहाँ एक ओर सामाजिक सहभागिता के नए अवसर उत्पन्न किए हैं, वहीं दूसरी ओर सामाजिक अलगाव, मानसिक तनाव, साइबर अपराध, सूचना भ्रम तथा डिजिटल लत जैसी गंभीर समस्याओं को भी जन्म दिया है। आधुनिक समाज में यह स्थिति एक महत्वपूर्ण समाजशास्त्रीय चिंता का विषय बन चुकी है, क्योंकि डिजिटल माध्यमों के नकारात्मक प्रभाव व्यक्ति और समाज दोनों के लिए दीर्घकालिक चुनौतियाँ उत्पन्न कर रहे हैं।

सोशल मीडिया का एक प्रमुख नकारात्मक प्रभाव सामाजिक अलगाव और अकेलेपन के रूप में देखा जाता है। डिजिटल प्लेटफॉर्मों ने आभासी संवाद को अत्यधिक बढ़ावा दिया है, जिसके परिणामस्वरूप प्रत्यक्ष सामाजिक संबंधों और आमने-सामने संवाद की प्रवृत्ति में कमी आई है। आज व्यक्ति सोशल मीडिया पर सैकड़ों लोगों से जुड़ा हुआ दिखाई देता है, किंतु वास्तविक जीवन में उसके सामाजिक संबंध कमजोर होते जा रहे हैं। विशेष रूप से युवा वर्ग अपना अधिकांश समय मोबाइल और सोशल मीडिया पर व्यतीत करता है, जिसके कारण पारिवारिक और सामुदायिक सहभागिता प्रभावित होती है। व्यक्ति धीरे-धीरे वास्तविक सामाजिक जीवन से दूर होकर आभासी संसार में अधिक सक्रिय हो जाता है। इस स्थिति के कारण अकेलेपन, भावनात्मक दूरी और सामाजिक असुरक्षा की भावना बढ़ती है। आधुनिक डिजिटल संस्कृति ने मानवीय संबंधों को अधिक त्वरित और औपचारिक बना दिया है, जहाँ भावनात्मक निकटता और आत्मीय संवाद का अभाव दिखाई देता है (टर्कल, 2011)। सोशल मीडिया पर निरंतर सक्रिय रहने के बावजूद व्यक्ति मानसिक रूप से अकेलापन अनुभव करता है, जो सामाजिक और मनोवैज्ञानिक असंतुलन का कारण बन सकता है।

मानसिक तनाव और अवसाद की समस्या भी सोशल मीडिया के अत्यधिक उपयोग से गहराई से जुड़ी हुई है। वर्तमान समय में युवा वर्ग सोशल मीडिया पर अपनी डिजिटल पहचान और लोकप्रियता को लेकर अत्यधिक संवेदनशील हो गया है। लाइक्स, कमेंट्स, फॉलोअर्स और ऑनलाइन स्वीकृति प्राप्त करने की प्रवृत्ति युवाओं में मानसिक दबाव और असुरक्षा की भावना को बढ़ाती है। सोशल मीडिया पर प्रदर्शित आदर्श जीवनशैली, सफलता और आकर्षक व्यक्तित्व की छवियाँ अनेक युवाओं में आत्मतुलना और हीन भावना को जन्म देती हैं। जब व्यक्ति स्वयं की तुलना दूसरों के डिजिटल जीवन से करता है, तब उसमें असंतोष, चिंता और आत्मविश्वास की कमी उत्पन्न हो सकती है। इसके अतिरिक्त लगातार ऑनलाइन रहने की आदत नींद की समस्या, ध्यान की कमी और मानसिक थकान को भी बढ़ाती है। अनेक शोधों में यह स्पष्ट किया गया है कि सोशल मीडिया का अत्यधिक उपयोग अवसाद, चिंता और भावनात्मक अस्थिरता जैसी समस्याओं को बढ़ावा देता है (ब्रूमिस्टर एवं लियरी, 1995)। विशेष रूप से किशोर और युवा वर्ग मानसिक रूप से अधिक संवेदनशील होने के कारण इन प्रभावों से अधिक प्रभावित होता है।

साइबर बुलिंग और ऑनलाइन अपराध आधुनिक डिजिटल समाज की गंभीर समस्याओं में से एक बन चुके हैं। सोशल मीडिया प्लेटफॉर्मों पर अभद्र टिप्पणियाँ, ट्रोलिंग, धमकी, व्यक्तिगत जानकारी का दुरुपयोग और ऑनलाइन उत्पीड़न जैसी घटनाएँ निरंतर बढ़ रही हैं। विशेष रूप से किशोरों और युवाओं को साइबर बुलिंग का अधिक सामना करना

पड़ता है, जिससे उनके आत्मसम्मान और मानसिक स्वास्थ्य पर नकारात्मक प्रभाव पड़ता है। ऑनलाइन उत्पीड़न कई बार व्यक्ति को मानसिक तनाव, अवसाद और सामाजिक भय की स्थिति तक पहुँचा देता है। इसके अतिरिक्त सोशल मीडिया के माध्यम से साइबर अपराध, फर्जी पहचान, ऑनलाइन धोखाधड़ी, डेटा चोरी और वित्तीय अपराधों में भी वृद्धि हुई है। डिजिटल तकनीक की बढ़ती निर्भरता ने व्यक्तिगत गोपनीयता और सुरक्षा को चुनौतीपूर्ण बना दिया है। अनेक लोग बिना पर्याप्त जागरूकता के अपनी व्यक्तिगत जानकारी सोशल मीडिया पर साझा कर देते हैं, जिसका दुरुपयोग साइबर अपराधी कर सकते हैं। इस प्रकार सोशल मीडिया का अनियंत्रित और असावधान उपयोग व्यक्ति और समाज दोनों के लिए गंभीर खतरे उत्पन्न करता है।

फेक न्यूज और सूचना भ्रम भी सोशल मीडिया के प्रमुख नकारात्मक प्रभावों में शामिल हैं। सोशल मीडिया पर सूचना का प्रसार अत्यंत तीव्र गति से होता है, किंतु कई बार यह जानकारी अप्रमाणित, भ्रामक और असत्य होती है। वर्तमान समय में अफवाहें, दुष्प्रचार और झूठी खबरें सोशल मीडिया के माध्यम से बहुत तेजी से फैलती हैं, जिससे समाज में भ्रम, भय और तनाव की स्थिति उत्पन्न हो जाती है। राजनीतिक, धार्मिक और सामाजिक मुद्दों पर फेक न्यूज कई बार सामाजिक संघर्ष और सामुदायिक तनाव को भी बढ़ावा देती है। सोशल मीडिया के एल्गोरिदम उपयोगकर्ताओं को ऐसी सामग्री अधिक दिखाते हैं, जो उनकी पसंद और विचारधारा से मेल खाती है, जिसके कारण व्यक्ति केवल एक पक्षीय जानकारी प्राप्त करता है। इस स्थिति को "इको चैंबर" की प्रवृत्ति कहा जाता है, जहाँ व्यक्ति विभिन्न दृष्टिकोणों से दूर होकर सीमित विचारधारा में बंध जाता है। सूचना भ्रम और दुष्प्रचार के कारण समाज में तार्किक सोच और तथ्यात्मक समझ कमजोर होती जा रही है। डिजिटल युग में सूचना की अधिकता के बावजूद सत्य और असत्य के बीच अंतर करना एक गंभीर चुनौती बन गया है।

समय प्रबंधन और डिजिटल लत की समस्या भी सोशल मीडिया के अत्यधिक उपयोग से उत्पन्न होने वाली महत्वपूर्ण चुनौतियों में से एक है। वर्तमान समय में अनेक युवा और विद्यार्थी अपना अत्यधिक समय सोशल मीडिया, ऑनलाइन गेम्स, वीडियो स्ट्रीमिंग और डिजिटल मनोरंजन में व्यतीत करते हैं। सोशल मीडिया प्लेटफॉर्मों की निरंतर आकर्षक सामग्री व्यक्ति को लंबे समय तक ऑनलाइन बनाए रखती है, जिसके कारण समय का प्रभावी उपयोग प्रभावित होता है। विद्यार्थी वर्ग में अध्ययन के प्रति एकाग्रता की कमी, कार्यक्षमता में गिरावट तथा समय प्रबंधन की समस्या तेजी से बढ़ रही है। कई बार व्यक्ति सोशल मीडिया के उपयोग पर नियंत्रण नहीं रख पाता और धीरे-धीरे डिजिटल लत का शिकार हो जाता है। डिजिटल लत केवल समय की बर्बादी तक सीमित नहीं है, बल्कि यह व्यक्ति के मानसिक, सामाजिक और शारीरिक स्वास्थ्य को भी प्रभावित करती है। अत्यधिक स्क्रीन टाइम के कारण शारीरिक निष्क्रियता, आँखों की समस्या, नींद में बाधा तथा सामाजिक संवाद में कमी जैसी समस्याएँ बढ़ रही हैं। इस प्रकार सोशल मीडिया का अनियंत्रित उपयोग व्यक्ति की जीवनशैली और सामाजिक संतुलन को प्रभावित करता है।

इस प्रकार सोशल मीडिया के नकारात्मक प्रभाव आधुनिक समाज के लिए गंभीर सामाजिक और मनोवैज्ञानिक चुनौतियाँ उत्पन्न कर रहे हैं। यद्यपि डिजिटल तकनीक ने जीवन को अधिक सुविधाजनक और संवादपरक बनाया है, फिर भी इसके दुष्प्रभावों की उपेक्षा नहीं की जा सकती। सामाजिक अलगाव, मानसिक तनाव, साइबर अपराध, सूचना भ्रम और डिजिटल लत जैसी समस्याएँ यह संकेत देती हैं कि सोशल मीडिया का संतुलित और जिम्मेदार उपयोग अत्यंत आवश्यक है। आधुनिक समाज में डिजिटल जागरूकता, साइबर सुरक्षा तथा स्वस्थ डिजिटल व्यवहार को बढ़ावा देकर ही सोशल मीडिया के नकारात्मक प्रभावों को नियंत्रित किया जा सकता है।

## 6. समाजशास्त्रीय परिप्रेक्ष्य

डिजिटल भारत और सोशल मीडिया के प्रभावों को समझने के लिए समाजशास्त्रीय दृष्टिकोण अत्यंत महत्वपूर्ण है। आधुनिक समाज में तकनीकी परिवर्तन केवल संचार और सूचना तक सीमित नहीं है, बल्कि यह सामाजिक संरचना, सांस्कृतिक मूल्यों, मानवीय व्यवहार तथा सामाजिक संबंधों को भी गहराई से प्रभावित करता है। सोशल मीडिया ने समाज में संवाद, पहचान निर्माण, सामाजिक सहभागिता और शक्ति संबंधों की प्रकृति को परिवर्तित किया है। इसलिए इसके प्रभावों का विश्लेषण समाजशास्त्र के विभिन्न सिद्धांतों के माध्यम से करना आवश्यक हो जाता है। कार्यात्मकतावादी दृष्टिकोण, संघर्ष सिद्धांत, प्रतीकात्मक अंतःक्रियावाद तथा उत्तर-आधुनिक समाज की अवधारणाएँ सोशल मीडिया और डिजिटल संस्कृति के सामाजिक प्रभावों को समझने के लिए महत्वपूर्ण सैद्धांतिक आधार प्रदान करती हैं। इन सिद्धांतों के माध्यम से यह स्पष्ट किया जा सकता है कि डिजिटल माध्यम आधुनिक समाज में किस प्रकार सामाजिक एकता, असमानता, पहचान और सांस्कृतिक परिवर्तन की प्रक्रियाओं को प्रभावित कर रहे हैं।

कार्यात्मकतावादी दृष्टिकोण के अनुसार समाज एक संगठित व्यवस्था है, जिसमें प्रत्येक संस्था और सामाजिक संरचना समाज की स्थिरता और संतुलन बनाए रखने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाती है। इस दृष्टिकोण के प्रमुख विचारकों में इमाइल दुर्खीम और टैल्कोट पार्सन्स का विशेष योगदान माना जाता है। कार्यात्मकतावादी दृष्टिकोण से देखा जाए तो सोशल मीडिया आधुनिक समाज में संचार, सूचना प्रसार और सामाजिक सहभागिता का महत्वपूर्ण माध्यम बन गया है। यह समाज के विभिन्न वर्गों को जोड़ने, सूचनाओं के आदान-प्रदान को सरल बनाने तथा सामाजिक चेतना को विकसित करने का कार्य करता है। सोशल मीडिया के माध्यम से व्यक्ति अपने विचार व्यक्त कर सकता है, सामुदायिक गतिविधियों में भाग ले सकता है तथा सामाजिक मुद्दों के प्रति जागरूक हो सकता है। डिजिटल प्लेटफॉर्मों ने शिक्षा, स्वास्थ्य, प्रशासन और सामाजिक अभियानों को अधिक प्रभावशाली और सुलभ बनाया है, जिससे सामाजिक संगठन और सहभागिता को बल मिला है। कार्यात्मकतावादी दृष्टिकोण यह मानता है कि सोशल मीडिया आधुनिक समाज की आवश्यकताओं को पूरा करने वाली एक नई सामाजिक संस्था के रूप में कार्य कर रहा है। हालाँकि, इस दृष्टिकोण के अनुसार यदि किसी सामाजिक संस्था का उपयोग असंतुलित हो जाए, तो वह सामाजिक अव्यवस्था और तनाव का कारण भी बन सकती है। इसलिए सोशल मीडिया के सकारात्मक उपयोग के साथ सामाजिक नियंत्रण और संतुलन बनाए रखना आवश्यक माना जाता है।

संघर्ष सिद्धांत सोशल मीडिया और डिजिटल संस्कृति को शक्ति, असमानता और वर्चस्व के संदर्भ में समझने का प्रयास करता है। इस सिद्धांत के प्रमुख विचारक कार्ल मार्क्स माने जाते हैं, जिन्होंने समाज को वर्ग संघर्ष और संसाधनों के असमान वितरण के आधार पर विश्लेषित किया। संघर्षवादी दृष्टिकोण के अनुसार डिजिटल तकनीक और सोशल मीडिया केवल संवाद के साधन नहीं हैं, बल्कि वे आर्थिक और वैचारिक शक्ति के उपकरण भी बन चुके हैं। आधुनिक डिजिटल समाज में बड़ी तकनीकी कंपनियाँ और मीडिया संस्थाएँ सूचना के प्रवाह तथा जनमत निर्माण पर प्रभाव स्थापित करती हैं। सोशल मीडिया प्लेटफॉर्मों के माध्यम से राजनीतिक, आर्थिक और सांस्कृतिक वर्चस्व को बनाए रखने का प्रयास किया जाता है। इसके अतिरिक्त डिजिटल असमानता भी एक महत्वपूर्ण समस्या है, जहाँ समाज का एक वर्ग तकनीकी संसाधनों और डिजिटल सुविधाओं तक आसानी से पहुँच रखता है, जबकि दूसरा वर्ग इन सुविधाओं से वंचित रहता है। इस स्थिति को "डिजिटल डिवाइड" कहा जाता है। संघर्ष सिद्धांत यह भी स्पष्ट करता है कि सोशल मीडिया के माध्यम से उपभोक्तावाद, बाज़ारवाद और सांस्कृतिक प्रभुत्व को बढ़ावा दिया जा रहा है, जिसके कारण पारंपरिक सामाजिक मूल्यों और स्थानीय संस्कृतियों पर प्रभाव पड़ रहा है। इसके साथ ही सोशल मीडिया राजनीतिक ध्रुवीकरण, वैचारिक संघर्ष और सामाजिक तनाव को भी बढ़ावा दे सकता है। इस प्रकार संघर्षवादी दृष्टिकोण सोशल मीडिया को सामाजिक असमानता और शक्ति संबंधों की अभिव्यक्ति के रूप में देखता है।

प्रतीकात्मक अंतःक्रियावाद का दृष्टिकोण सोशल मीडिया को दैनिक जीवन की सामाजिक अंतःक्रियाओं और प्रतीकों के माध्यम से समझने का प्रयास करता है। इस सिद्धांत के प्रमुख विचारकों में जॉर्ज हर्बर्ट मीड और हर्बर्ट ब्लूमर का नाम उल्लेखनीय है। प्रतीकात्मक अंतःक्रियावाद के अनुसार व्यक्ति अपने सामाजिक व्यवहार और पहचान का निर्माण सामाजिक संवाद और प्रतीकों के माध्यम से करता है। सोशल मीडिया ने इस प्रक्रिया को डिजिटल रूप प्रदान किया है, जहाँ व्यक्ति अपनी पहचान, विचार और भावनाओं को ऑनलाइन माध्यमों के जरिए प्रस्तुत करता है। फेसबुक प्रोफाइल, इंस्टाग्राम पोस्ट, स्टेटस, इमोजी, लाइक्स और कमेंट्स आधुनिक डिजिटल समाज में सामाजिक

प्रतीकों का कार्य करते हैं। व्यक्ति सोशल मीडिया के माध्यम से अपनी छवि और सामाजिक पहचान का निर्माण करता है तथा दूसरों की प्रतिक्रियाओं के आधार पर अपने व्यवहार को प्रभावित करता है। इस दृष्टिकोण के अनुसार सोशल मीडिया ने आत्म-अभिव्यक्ति और सामाजिक अंतःक्रिया के नए स्वरूप विकसित किए हैं। डिजिटल मंचों पर व्यक्ति अपनी इच्छानुसार व्यक्तित्व प्रस्तुत कर सकता है, जिसके कारण वास्तविक और आभासी पहचान के बीच अंतर भी उत्पन्न होता है। सोशल मीडिया पर सामाजिक स्वीकृति और लोकप्रियता प्राप्त करने की प्रवृत्ति व्यक्ति के आत्मबोध और सामाजिक व्यवहार को प्रभावित करती है। इस प्रकार प्रतीकात्मक अंतःक्रियावाद सोशल मीडिया को सामाजिक अर्थों, प्रतीकों और पहचान निर्माण की प्रक्रिया के रूप में व्याख्यायित करता है।

उत्तर-आधुनिक समाज और डिजिटल संस्कृति की अवधारणा सोशल मीडिया और आधुनिक तकनीकी जीवन को समझने के लिए अत्यंत प्रासंगिक है। उत्तर-आधुनिकता का सिद्धांत यह मानता है कि आधुनिक समाज में पारंपरिक संस्थाएँ, स्थायी मूल्य और निश्चित सत्य कमजोर हो रहे हैं तथा उनकी जगह बहुलता, आभासी वास्तविकता और उपभोक्तावादी संस्कृति ले रही है। जीन बौद्रिलार्ड और जिग्मुंट बाउमन जैसे विचारकों ने आधुनिक डिजिटल समाज को आभासी और तरल समाज के रूप में व्याख्यायित किया है। सोशल मीडिया ने वास्तविक और आभासी जीवन के बीच की सीमाओं को धुंधला कर दिया है। व्यक्ति अब डिजिटल मंचों पर अपनी पहचान और जीवनशैली को इस प्रकार प्रस्तुत करता है, जहाँ वास्तविकता की अपेक्षा उसकी आभासी छवि अधिक महत्वपूर्ण बन जाती है। उत्तर-आधुनिक समाज में सोशल मीडिया ने उपभोक्तावादी संस्कृति, त्वरित संतुष्टि और प्रदर्शनवादी जीवनशैली को बढ़ावा दिया है। युवा वर्ग डिजिटल माध्यमों के जरिए वैश्विक संस्कृति, फैशन और मनोरंजन से प्रभावित हो रहा है, जिसके कारण पारंपरिक सांस्कृतिक मूल्यों में परिवर्तन दिखाई देता है। इसके साथ ही सोशल मीडिया ने सूचनाओं और विचारों की बहुलता को बढ़ावा दिया है, जहाँ सत्य और असत्य, वास्तविकता और आभासीता के बीच अंतर करना कठिन होता जा रहा है। उत्तर-आधुनिक दृष्टिकोण यह स्पष्ट करता है कि डिजिटल संस्कृति ने सामाजिक जीवन को अधिक गतिशील, अस्थायी और आभासी बना दिया है।

इस प्रकार समाजशास्त्रीय दृष्टिकोण सोशल मीडिया और डिजिटल संस्कृति के बहुआयामी प्रभावों को समझने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाते हैं। कार्यात्मकतावादी दृष्टिकोण सोशल मीडिया को सामाजिक एकता और सहभागिता का माध्यम मानता है, जबकि संघर्ष सिद्धांत इसे शक्ति और असमानता की अभिव्यक्ति के रूप में देखता है। प्रतीकात्मक अंतःक्रियावाद सोशल मीडिया को पहचान और सामाजिक संवाद की प्रक्रिया से जोड़ता है, वहीं उत्तर-आधुनिक दृष्टिकोण डिजिटल संस्कृति को आभासीता, उपभोक्तावाद और बदलते सामाजिक मूल्यों के संदर्भ में विश्लेषित करता है। इन सभी सिद्धांतों के माध्यम से यह स्पष्ट होता है कि सोशल मीडिया आधुनिक समाज में केवल तकनीकी साधन नहीं है, बल्कि यह सामाजिक संरचना, सांस्कृतिक चेतना और मानवीय व्यवहार को गहराई से प्रभावित करने वाली एक महत्वपूर्ण सामाजिक शक्ति बन चुका है।

## 7. निष्कर्ष

डिजिटल भारत के विकसित होते परिदृश्य में सोशल मीडिया ने भारतीय समाज, विशेष रूप से युवा वर्ग के जीवन, व्यवहार और सामाजिक संबंधों को गहराई से प्रभावित किया है। सूचना एवं संचार प्रौद्योगिकी के तीव्र विस्तार ने सामाजिक संवाद, सांस्कृतिक आदान-प्रदान तथा सामुदायिक सहभागिता के स्वरूप को व्यापक रूप से परिवर्तित किया है। प्रस्तुत अध्ययन "डिजिटल भारत और बदलते सामाजिक सम्बन्ध: सोशल मीडिया के संदर्भ में युवाओं के व्यवहार का समाजशास्त्रीय अध्ययन" के माध्यम से यह स्पष्ट हुआ कि सोशल मीडिया आधुनिक समाज में केवल संचार का माध्यम नहीं रह गया है, बल्कि यह सामाजिक संरचना, सांस्कृतिक चेतना, पहचान निर्माण और मानवीय संबंधों को प्रभावित करने वाली एक महत्वपूर्ण सामाजिक शक्ति बन चुका है। डिजिटल तकनीक ने समाज को अधिक गतिशील, त्वरित और वैश्विक बनाया है, किंतु इसके साथ अनेक सामाजिक और मनोवैज्ञानिक चुनौतियाँ भी उत्पन्न हुई हैं। इस अध्ययन से यह निष्कर्ष निकलता है कि सोशल मीडिया के प्रभाव बहुआयामी हैं, जिनमें सकारात्मक और नकारात्मक दोनों पक्ष सम्मिलित हैं।

शोध के प्रमुख निष्कर्षों से यह स्पष्ट हुआ कि सोशल मीडिया ने युवाओं के सामाजिक जीवन और व्यवहार में व्यापक परिवर्तन उत्पन्न किए हैं। डिजिटल माध्यमों ने सूचना और ज्ञान तक पहुँच को अत्यंत सरल और त्वरित बनाया है,

जिससे शिक्षा, जागरूकता और कौशल विकास को नई दिशा मिली है। सोशल मीडिया ने युवाओं को वैश्विक स्तर पर संवाद और आत्म-अभिव्यक्ति के अवसर प्रदान किए हैं, जिसके कारण उनकी सामाजिक चेतना और भागीदारी में वृद्धि हुई है। इसके अतिरिक्त डिजिटल प्लेटफॉर्मों ने रोजगार, उद्यमिता और रचनात्मक अभिव्यक्ति के नए अवसर भी उपलब्ध कराए हैं। दूसरी ओर अध्ययन यह भी दर्शाता है कि सोशल मीडिया के अत्यधिक उपयोग ने सामाजिक अलगाव, मानसिक तनाव, डिजिटल निर्भरता, साइबर अपराध और सूचना भ्रम जैसी समस्याओं को बढ़ावा दिया है। इस प्रकार सोशल मीडिया आधुनिक समाज में विकास और संकट दोनों की संभावनाओं को साथ लेकर चल रहा है। सामाजिक संबंधों में आए परिवर्तन इस अध्ययन का एक महत्वपूर्ण निष्कर्ष है। पारंपरिक भारतीय समाज में परिवार, समुदाय और प्रत्यक्ष सामाजिक संवाद को अत्यधिक महत्व दिया जाता था, किंतु डिजिटल संस्कृति के विस्तार के कारण सामाजिक संबंधों की प्रकृति में परिवर्तन दिखाई देने लगा है। सोशल मीडिया ने आभासी संबंधों और ऑनलाइन संवाद को बढ़ावा दिया है, जिसके कारण प्रत्यक्ष मानवीय संपर्क और भावनात्मक निकटता में कमी आई है। परिवार के सदस्यों के मध्य संवाद की प्रकृति अधिक औपचारिक और डिजिटल होती जा रही है। मित्रता और सामाजिक सहभागिता अब भौतिक समाज की सीमाओं से निकलकर आभासी संसार में विस्तारित हो चुकी है। हालाँकि सोशल मीडिया ने दूरस्थ व्यक्तियों को जोड़ने और वैश्विक समुदाय का निर्माण करने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाई है, फिर भी इसके कारण सामाजिक अलगाव और अकेलेपन की समस्या भी बढ़ी है। इस अध्ययन से यह स्पष्ट होता है कि डिजिटल तकनीक ने सामाजिक संबंधों को अधिक व्यापक और त्वरित बनाया है, किंतु उनके भावनात्मक और मानवीय पक्ष को चुनौती भी दी है।

युवाओं के व्यवहार पर सोशल मीडिया का प्रभाव अत्यंत व्यापक और गहरा दिखाई देता है। आधुनिक युवा वर्ग अपनी पहचान, विचार, जीवनशैली और सामाजिक उपस्थिति को डिजिटल माध्यमों के जरिए अभिव्यक्त करने लगा है। सोशल मीडिया ने आत्म-अभिव्यक्ति, रचनात्मकता और वैश्विक दृष्टिकोण को प्रोत्साहित किया है, किंतु इसके साथ तुलना, प्रतिस्पर्धा और डिजिटल लोकप्रियता की प्रवृत्ति भी बढ़ी है। लाइक्स, फॉलोअर्स और ऑनलाइन मान्यता प्राप्त करने की मानसिकता ने युवाओं के व्यवहार और आत्मबोध को प्रभावित किया है। इसके अतिरिक्त भाषा, संस्कृति, पहनावे और जीवनशैली पर भी डिजिटल संस्कृति का स्पष्ट प्रभाव दिखाई देता है। युवा वर्ग वैश्विक सांस्कृतिक प्रवृत्तियों और उपभोक्तावादी जीवनशैली की ओर अधिक आकर्षित हो रहा है। सोशल मीडिया के अत्यधिक उपयोग के कारण ध्यान की कमी, समय प्रबंधन की समस्या, मानसिक तनाव और डिजिटल लत जैसी चुनौतियाँ भी तेजी से बढ़ रही हैं। इस प्रकार सोशल मीडिया ने युवाओं के व्यवहार में स्वतंत्रता, रचनात्मकता और वैश्विकता के नए आयाम विकसित किए हैं, किंतु इसके साथ अनेक मनोवैज्ञानिक और सामाजिक चुनौतियाँ भी उत्पन्न की हैं।

अध्ययन से यह स्पष्ट होता है कि वर्तमान समय में संतुलित डिजिटल उपयोग की आवश्यकता अत्यंत महत्वपूर्ण है। सोशल मीडिया और डिजिटल तकनीक आधुनिक जीवन का अभिन्न हिस्सा बन चुके हैं, इसलिए इनसे पूर्ण दूरी संभव नहीं है। आवश्यकता इस बात की है कि डिजिटल माध्यमों का उपयोग जिम्मेदारी, जागरूकता और संतुलन के साथ किया जाए। डिजिटल साक्षरता और साइबर जागरूकता को बढ़ावा देना आवश्यक है, ताकि युवा वर्ग सोशल मीडिया के सकारात्मक उपयोग को समझ सके और उसके नकारात्मक प्रभावों से बच सके। परिवार, शिक्षण संस्थानों और समाज को युवाओं में स्वस्थ डिजिटल व्यवहार विकसित करने की दिशा में सक्रिय भूमिका निभानी चाहिए। प्रत्यक्ष सामाजिक संवाद, पारिवारिक सहभागिता और सांस्कृतिक मूल्यों को सशक्त बनाकर डिजिटल निर्भरता को संतुलित किया जा सकता है। साथ ही मानसिक स्वास्थ्य और समय प्रबंधन के प्रति जागरूकता बढ़ाना भी आवश्यक है, जिससे युवा वर्ग सोशल मीडिया का उपयोग रचनात्मक और सकारात्मक उद्देश्यों के लिए कर सके। भविष्य के लिए यह आवश्यक है कि डिजिटल समाज के बदलते स्वरूप का निरंतर समाजशास्त्रीय अध्ययन किया जाए। सोशल मीडिया और कृत्रिम बुद्धिमत्ता जैसी नई तकनीकों का प्रभाव आने वाले समय में और अधिक व्यापक होने की संभावना है। इसलिए सरकार, शिक्षण संस्थानों, सामाजिक संगठनों और मीडिया को मिलकर डिजिटल नैतिकता, साइबर सुरक्षा और जिम्मेदार ऑनलाइन व्यवहार को बढ़ावा देना चाहिए। विद्यालयों और विश्वविद्यालयों में डिजिटल साक्षरता तथा मीडिया शिक्षा को पाठ्यक्रम का हिस्सा बनाया जाना चाहिए, ताकि युवा वर्ग सूचना के सही और गलत स्वरूप में अंतर कर सके। इसके अतिरिक्त सोशल मीडिया प्लेटफॉर्मों पर फेक न्यूज, साइबर अपराध और ऑनलाइन

उत्पीड़न को नियंत्रित करने के लिए प्रभावी नीतियों और कानूनी व्यवस्थाओं की आवश्यकता है। भविष्य में डिजिटल तकनीक का उपयोग तभी समाज के लिए अधिक लाभकारी सिद्ध होगा, जब तकनीकी विकास के साथ मानवीय मूल्यों, सामाजिक उत्तरदायित्व और नैतिक चेतना को भी समान महत्व दिया जाएगा।

## संदर्भ सूची

1. अग्रवाल, जी. के. (2019). *सोशल मीडिया और भारतीय समाज*. रावत पब्लिकेशन।
2. बौद्रीलार्ड, जीन. (1994). *सिमुलाक्रा एंड सिमुलेशन*. यूनिवर्सिटी ऑफ मिशिगन प्रेस।
3. बाउमन, जिग्मुंट. (2000). *लिक्रिड मॉडर्निटी*. पॉलिटी प्रेस।
4. बौमिस्टर, रॉय एफ., एवं लियरी, मार्क आर. (1995). "द नीड टू बिलॉन: डिज़ायर फॉर इंटरपर्सनल अटैचमेंट्स ऐज़ अ फंडामेंटल ह्यूमन मोटिवेशन।" *साइकोलॉजिकल बुलेटिन*, 117(3), 497-529।
5. ब्लूमर, हर्बर्ट. (1969). *सिंबॉलिक इंटरैक्शनिज़्म: पर्सपेक्टिव एंड मेथड*. यूनिवर्सिटी ऑफ कैलिफोर्निया प्रेस।
6. चौधरी, संजय. (2021). *डिजिटल संस्कृति और युवा पीढ़ी*. वाणी प्रकाशन।
7. कास्टेल्स, मैनुएल. (2010). *द राइज़ ऑफ़ द नेटवर्क सोसाइटी* (द्वितीय संस्करण)। वाइली-ब्लैकवेल।
8. दुबे, श्यामाचरण. (2001). *भारतीय समाज*. नेशनल बुक ट्रस्ट।
9. दुर्खीम, इमाइल. (1984). *द डिवीजन ऑफ़ लेबर इन सोसाइटी* (डब्ल्यू. डी. हॉल्स, अनुवादक)। फ्री प्रेस। (मूल कृति 1893 में प्रकाशित)।
10. गिडेन्स, एंथनी. (1991). *मॉडर्निटी एंड सेल्फ-आइडेंटिटी: सेल्फ एंड सोसाइटी इन द लेट मॉडर्न एज*. स्टैनफोर्ड यूनिवर्सिटी प्रेस।
11. गोयल, रश्मि. (2020). *सोशल मीडिया और बदलते सामाजिक संबंध*. साहित्य भवन।
12. भारत सरकार। (2015). *डिजिटल भारत कार्यक्रम*. इलेक्ट्रॉनिक्स और सूचना प्रौद्योगिकी मंत्रालय।
13. हैबरमास, युर्गेन. (1989). *द स्ट्रक्चरल ट्रांसफॉर्मेशन ऑफ़ द पब्लिक स्फीयर: एन इन्क्वायरी इंटू अ कैटेगरी ऑफ़ बुर्जुआ सोसाइटी* (टी. बर्गर एवं एफ. लॉरेंस, अनुवादक)। एमआईटी प्रेस।
14. कापलान, एंड्रियास एम., एवं हैनलेन, माइकल. (2010). "यूज़र्स ऑफ़ द वर्ल्ड, यूनाइट! द चैलेंजेज एंड ऑपच्युनिटीज ऑफ़ सोशल मीडिया।" *बिज़नेस होराइज़न्स*, 53(1), 59-68।
15. कुमार, विनोद, एवं नंदा, प्रीति. (2020). "सोशल मीडिया इन हायर एजुकेशन ड्यूरिंग कोविड-19।" *इंटरनेशनल जर्नल ऑफ़ एडवांस्ड साइंस एंड टेक्नोलॉजी*, 29(8), 7882-7890।
16. मार्क्स, कार्ल. (1867). *दास कैपिटल*. प्रोग्रेस पब्लिशर्स।
17. मिश्रा, रमेश. (2018). *भारतीय युवा और सोशल मीडिया*. राजकमल प्रकाशन।
18. मीड, जॉर्ज हर्बर्ट. (1934). *माइंड, सेल्फ एंड सोसाइटी*. यूनिवर्सिटी ऑफ़ शिकागो प्रेस।
19. पार्सन्स, टैल्कोट. (1951). *द सोशल सिस्टम*. फ्री प्रेस।
20. सिंह, योगेन्द्र. (2004). *भारत में सामाजिक परिवर्तन*. रावत पब्लिकेशन।
21. शर्मा, आर. एन. (2017). *सूचना प्रौद्योगिकी और समाज*. अटलांटिक पब्लिशर्स।
22. टर्कल, शेरी. (2011). *अलोन टुगेदर: व्हाई वी एक्सपेक्ट मोर फ्रॉम टेक्नोलॉजी एंड लेस फ्रॉम ईच अदर*. बेसिक बुक्स।